International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.7 Nov – Dec 2022

भारतीय साहित्य के आधुनिक काल में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. आशा कुमारी
सहायक प्रोफ़ेसर आई०ई०सी० विश्वविद्यालय, बद्दी, हिमाचल प्रदेश
***Corresponding Author*- डॉ. आशा कुमारी**

प्रस्तावना :

वैदिक काल से ही भारतीय साहित्य में 'राष्ट्र' जैसे विशिष्ट शब्द का प्रयोग होता रहा है | जिस प्रकार साहित्य का मानव जीवन से गहरा नाता है ठीक उसी तरह राष्ट्र से समाज का गहन सम्बन्ध है | "देश भक्ति का उद्वेलन कभी समर्पण तो कभी आंदोलन का रूप धारण कर लेता है, जिससे व्यक्ति के स्वत्व से लेकर राष्ट्र तथा देश की स्वतंत्रता और समानता की सुरक्षा के लिए सर्वस्व समर्पण तक के भाव समाविष्ट होते हैं।"[i] राष्ट्र को आधुनिक संकल्पना में नहीं रखा जा सकता क्योंकि राष्ट्र का सम्बन्ध प्राचीनतम है | हम कह सकते हैं कि राष्ट्र हमारी सांस्कृतिक विरासत है | यह हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है | राष्ट्र का हमारी संस्कृति से घनिष्ठ सम्बन्ध है | साहित्य भी इसी संस्कृति का हिस्सा है और एक-दूसरे के साथ परस्पर गुथे हुए हैं | यह एक कड़ी है जिसमें जनमानस के भीतर राष्ट्रीय चेतना को जगाने एवं सुदृढ़ करने में मदद मिलती है | साहित्य में हमेशा से राष्ट्रीय चेतना अग्रणी भूमिका में रही है | भारत देश में रष्ट्रीय चेतना सदैव विद्यमान रही है इसके बिना कोई भी देश अछूता नहीं रह सकता |

राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र की उन्नति का मूल मंत्र है | समस्त मानव जाति के विकास में राष्ट्रीय भावना की अहम भूमिका रहती है | भारतीय राष्ट्रीयता ने अध्यात्म, दर्शन तथा साहित्य के माध्यम से नव जागरण एवं नव चेतना का संचार किया है | "राष्ट्रीय संचेतना को झकझोरने वाला काव्यजन मानस को आंदोलित कर नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का साहस भरता है | उन मूल्यों को महत्त्व देने के लिए प्रेरित करता है, जिनमें हिंसा, घृणा को नकारकर एक उन्मुक्त वातावरण उत्पन्न किया जा सके और जिसमें सभी धर्म निश्चिन्त होकर सांस ले सकें | यदि प्रत्येक राष्ट्र-धर्मी काव्य अपने समाज के अंदर व्यापक उदात्त-भाव और रचनात्मक संस्कार उत्पन्न कर सकें, तो निश्चय ही ऐसा काव्य मानव के कल्याण के लिए होगा | अर्थात् राष्ट्रीय-काव्य मूलतः मानवतावादी काव्य ही है |"[ii] भारतीय साहित्य का आधुनिक काल राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है | इस युग में ऐसे अनेक समाजसेवी, राष्ट्रप्रेमी हुए हैं, जिन्होंने भारत की रक्षा, उसकी एकता एवं अखंडता के लिए अपना विशिष्ट योगदान दिया | वहीँ कई लेखकों ने अविरल गति से अपनी काव्यात्मक दृष्टि द्वारा जनमानस की पीड़ा को अभिव्यक्त करने का बीड़ा उठाया | इन लेखकों ने देश की दुर्दशा को देखते हुए अपनी कलम के माध्यम से तीखे प्रहार कर विरोधियों की नींव हिलाकर रख दी थी | समाजसेवियों, वीर सपूतों ने माँ भारती की रक्षा के लिए अपने प्राणों तक की आहुति दे दी थी | इस युग तक देश की हालत बेहद दयनीय थी | विरोधियों की कूट नीतियों से भारतीय जनता त्रस्त थी | भारतवासियों की व्याकुलता, बेबसी एवं त्रस्तता को ध्यान में रखते हुए आधुनिक युग के कवियों ने अपनी काव्यधारा को प्रवाहित कर लोगों में जागरूकता का संदेश फैलाया | लोगों के भीतर साहस, नयी ऊर्जा, नया जोश और उम्मीद की किरण जगाई | देशभक्ति से ओतप्रोत कवितायेँ लिखकर उस दुर्दशा से बाहर निकलने की राह तलाश की |आधुनिक काल में तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित होकर साहित्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ | विभिन्न कवियों ने राष्ट्रीय चेतना को उद्घाटित करने का प्रयास किया | हिंदी साहित्य में आधुनिक काल सर्वश्रेष्ठ युग माना जाता है | अंग्रेजी हुकुमत से त्रस्त जनता की पीड़ा को स्वर देने में विभिन्न विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है | इस युग में राष्ट्रीय भावना का विकास बहुत तीव्र गति से हुआ | इस युग में गद्य साहित्य का विकास हुआ | इस युग के आरम्भ में भारतेंदु, राजा लक्ष्मण सिंह, जगन्नाथ दास रत्नाकर, श्रीधर पाठक आदि लेखकों का विशेष योगदान रहा है उन्होंने ब्रजभाषा में काव्य रचना की | इस काल में न केवल कविता बल्कि साहित्य की अन्य विधाओं का समान रूप से विकास हुआ | इस युग में साहित्य का चहुँमुखी विकास हुआ है | इस युग के कवियों में राष्ट्रीय चेतना एक व्यापक फलक पर दिखाई पड़ती है | यहाँ तक आते-आते बहुत से लेखकों में राष्ट्र के प्रति चिंता साफ़ झलकती है | देश के प्रति यह चिंता व्यक्ति के विचारों एवं भावनाओं की एकता पर निर्भर करती है | विभिन्न विद्वानों, साहित्यकारों एवं शिक्षाविदों आदि ने भारतीय

परम्परा को अपने भिन्न-भिन्न विचारों से परिलक्षित किया है | आचार्य रामचन्द्र शुक्ल शब्द सागर की भूमिका में 'हिंदी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रन्थ में साहित्य को परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि "प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्वृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है | जनता की चितवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है | आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परम्परा को परखते हुए साहित्य परम्परा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है |"[iii]आधुनिक काल का आरम्भ भारतेंदु से माना जाता है | भारतेंदु ने आधुनिक काल में राष्ट्रीय चेतना की अलख जगाने का कार्य किया और राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास किया | भारतेन्दुयुगीन मंडली के लेखकों के साहित्य में राष्ट्रप्रेम की भावना दिखाई पड़ती है इस युग कवियों ने राष्ट्रीय भावनाओं को वाणी प्रदान की है | भारतेंदु जी ने राष्ट्र के उद्धार के लिए ईश्वर से विनती करते हुए लिखा है – "डूबत भारत नाथ बेगि जागो अब जागो |"[iv] आधुनिक काल में भारतीयों के अंदर राष्ट्रप्रेम की अलख जगाने हेतु बाबू भारतेंदु हरिश्चन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है | भारतेंदु ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश में फैली विकट परिस्थितियों तथा हीन भावना से ग्रस्त जनता को प्रेरित किया | भारतेंदु ने भारत की हीन दशा को निम्न पंक्ति में व्यक्त किया है - "आवहु सब मिलि रोवहु भाई, हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई |"[v] इस युग के कवियों ने जनमानस में राष्ट्रीयता की भावना जगाने का उल्लेखनीय कार्य किया | अंग्रेजों के शोषण का भारतेंदु ने निम्न पंक्तियों में इस प्रकार वर्णन किया – वे लिखते हैं -

"भीतर-भीतर सब रस चूसै, हँसि-हँसि के तन-
मन-धन मूसै |
ज़ाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि सज्जन !
नहिं अंगरेज ||"[vi]

द्विवेदीयुगीन कविता का मुख्य स्वर राष्ट्रीयता था | इस दौर के अधिकतर कवियों ने राष्ट्र प्रेम एवं देशभक्तिपूर्ण कविताओं को प्रमुखता दी और पराधीनता से मुक्त होने के लिए क्रांति की ज्वाला लोगों के भीतर जगाने का कार्य किया | 'बलिदान-गान' कविता में कविवर शंकर ने कहा था :

"देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा |"[vii]

कविताओं के माध्यम से देश की परिस्थितियों को मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है | इन कविताओं में देश की वर्तमान स्थितियों से अवगत करवाया गया है और साथ ही भविष्य में सचेत रहने का संदेश दिया गया है | इन कविताओं में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को सहेज कर रखने तथा अपने कर्तव्यों का पालन करने की सलाह दी गयी है | इस युग में देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था | गुलामी की उन बेड़ियों को तोड़ने के लिए देशवासियों को प्रेरित करते हुए मोहनलाल द्विवेदी लिखते हैं :

"जागो हिन्दू मुग़ल मरहठे, जागो मेरे भारतवासी |
जननी की जंजीरे बजतीं, जगो रहे कड़ियों के चाले ||
सुना रही हूँ तुम्हें भैरवी, जागो मेरे सोने वाले ||"[viii]

द्विवेदीयुग राष्ट्रीय भावना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है | छायावाद, प्रगतिवाद के काव्य में भी राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव देखा जा सकता है | इन कवियों की रचनाओं में अतीत की गौरवगाथा के साथ वर्तमान काल की दुर्दशा का भी चित्रण उजागर होता है | छायावाद के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद ने अपनी कविताओं, कहानियों में मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने का संदेश दिया है | राष्ट्र कवि के रूप में पहचान बनाने वाले रामधारी सिंह दिनकर ने अपने काव्य में राष्ट्रीय भावना को जगाने का सर्वोत्तम कार्य किया है | वे लिखते हैं कि -

"जिये तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष |
निछावर कर दे हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष ||
ओ गाँधी के शान्त सदन में आग जलाने वाले |
मानवता के बधिक आसुरी महिमा के मतवाले ||
वैसे तो मन मार शील से हम विनम्र जीते हैं |
आततायियों को शोणित भी लेकिन हम पीते हैं |"[ix]

समाज की विकृत परम्पराएँ एवं रूढ़ियाँ राष्ट्र को पतन की ओर ले जाती है | आधुनिक काल के कवियों ने चिरनिद्रा में डूबे देशवासियों को जागृत करने के लिए देशप्रेम के गीत गाकर संघर्ष के लिए झकझोर कर रख दिया और उठ खड़े होने का साहस पैदा किया | इस युग के कवियों के भीतर बह रही राष्ट्रीय चेतना की धारा ने सुप्तावस्था में पड़े समाज को नयी दिशा और नयी ऊर्जा प्रदान की है | राष्ट्रीय गरिमा में नव-जीवन का संचार करने वाले महान राष्ट्रवादियों की श्रेणी में भक्तिकाल के प्रमुख हस्ताक्षर महात्मा कबीरदास, राष्ट्र भक्त तुलसी, सूरदास और रीतिकाल के कवियों में भूषण, आधुनिक काल में भारतेंदु आदि ने अपनी कलम के बल पर राष्ट्रवादी स्वरों से लोक चेतना को झकझोर कर रख दिया | राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' कविता में मानस पटल पर राष्ट्रीयता की गहरी छाप छोड़ी थी | इसी के साथ माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामनरेश त्रिपाठी आदि कवियों ने राष्ट्रवाद तथा जनजागरण एवं वीररस युक्त गीतों से राष्ट्र को नवीन चेतना एवं शक्ति प्रदान की | इन कवियों की रचनाओं ने भारतीय जनमानस को नयी चेतना से सराबोर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया | विभिन्न भाषाओँ के आधुनिक काव्य में राष्ट्रीय भावना का समावेश परिलक्षित होता है |

रामधारी सिंह दिनकर ने वीर, ओज, और शौर्य से युक्त कवितायेँ लिख कर जनमानस की सोई हुई धमनियों में रक्त का संचार किया है | अपने देश की जनता की पीड़ा को दलित समाज के गरीब, भूख से अकुलाते बच्चों का मार्मिक चित्रण निम्न पंक्तियों में किया है –

"श्वानों को मिलता दूध वस्त्र,
भूखे बालक अकुलाते हैं |
माँ की हड्डी से चिपक,
ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं ||"[x]

निष्कर्ष : अन्तोगत्वा हम कह सकते हैं कि कि भारतीय साहित्य में आदिकाल से लेकर अब तक राष्ट्रीय चेतना की अजस्र धारा प्रवाहित होती रही है | इस दृष्टि से हिंदी के कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से अनेक रचनाओं में राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रदान की है | साथ ही देश की एकता अखंडता, उसकी सुरक्षा, समृद्धि हेतु निरंतर देश की जनता को प्रेरित करने का प्रयास किया और इस ओर उनका मार्गदर्शन किया | देश की रक्षा हेतु लोगों में वीरता, त्याग, साहस का संचार कर देश पर कुर्बान होने के लिए प्रेरित किया |

"जिनको न जिन गौरव तथा निज देश का अभिमान है |
वह नर नहीं नर पशु निरा और मृतक समान है ||"

उक्त पंक्तियों के माध्यम से अपने देश पर अपनी मातृभूमि के लिए प्राणोत्सर्ग करने हेतु प्रेरित किया गया है | कहा गया है कि जो अपने देश की सेवा या रक्षा नहीं कर सकता वह व्यक्ति नहीं अपितु पशु के समान है उनका जीवन पूर्ण रूप से निरर्थक है | इसीलिए भारत माता के अनेक वीर सपूतों ने राष्ट्र हित में अपना जीवन न्योछावर कर दिया था | राष्ट्र के सच्चे सेवकों का एकमात्र लक्ष्य था अपनी जान की बाजी लगा कर देशवासियों में राष्ट्रीय भावना का संचार करना | जिस मिशन में वे सफल भी हुए और देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवा सके | भारतीय साहित्य का आधुनिक काल राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

[i] महाले, डॉ. सुभाष, 'माखनलाल चतुर्वेदी और वि.दा. सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना', (1997), चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, पृ.25

[ii] https://vimisahitya.wordpress.com/tag/

[iii] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास

[iv] https://e-gyan-vigyan.com/aadhunik-kaal-mein-raashtreey-chetana-ka-uday/

[v] डॉ. शिवकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियां, अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली, बीसवां संस्करण: 2015, पृ. 472

[vi] सं. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पैंतालीसवां पुनर्मुद्रण संस्करण : 2013, प.440

[vii] सं. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पैंतालीसवां पुनर्मुद्रण संस्करण : 2013, पृ.477

[viii] https://e-gyan-vigyan.com/aadhunik-kaal-mein-raashtreey-chetana-ka-uday/

[ix] https://e-gyan-vigyan.com/aadhunik-kaal-mein-raashtreey-chetana-ka-uday/

[x] आधुनिक काव्य, सम्पादक - हिंदी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय (2011) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ.145